स्त्री-विमर्श में मधु काँकरिया के उपन्यासों का स्थान

डॉ. प्रियंका कुमारी

सहायक प्राध्यापक

हिन्दी, महात्मा गाँधी, माहविद्यालय, सुन्दरपुर, दरभंगा

सारांश–

हिन्दी साहित्य के समकालीन स्त्री-विमर्श में मधु कांकरियाँ के उपन्यासों का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट है। वे स्त्री के दमित अनकहे और सामाजिक रूप से हाशिए पर धकेले गए जीवन के विभिन्न पहलुओं को बेबाकी से उाजगर करती है। उनके लेखन में नारी अस्मिता, देह की स्वतंत्रता, महानगरीय कुंठा और पितृसत्तात्मक शोषण के खिलाफ प्रतिशोध की प्रखर अभिव्यक्ति है। काँकरिया के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श के प्रमुख बिन्दुओं जैसे- वेश्यावृत्ति और देह की त्रासदी, धार्मिक और पारिवारिक शोषण का पर्दाफाश, महानगरीय जीवन में नारी अस्मिता, आदिवासी स्त्री और संघर्ष, नई स्त्री का प्रतिशोध के चित्रण अत्यंत मार्मिकता से किया गया है। काँकरिया के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श केवल सैद्धांतिक नहीं, अपितु यथार्थवादी है। उन्होंने अपने उपन्यासों में पितृसत्ता के नैतिक मापदंडों को तोड़कर पुरुष-केद्रित समाज के सामने स्त्री पक्ष को बिना किसी बड़बोलेपन के दृढ़ता से रखती है।

मुख्य शब्द– स्त्री-विमर्श, नारी अस्मिता, पितृसत्तात्मक शोषण, देह की स्वतंत्रता महानगरीय कुंठा, वेश्यावृत्ति ।

प्रस्तावना–

समकालीन उपन्यास लेखिका मधु काँकरिया के सभी उपन्यास समकालीन राज और समाज की वैविध्य-भय जीवन को अभिव्यक्त करने में सक्षम है। लेखिका ने वर्तमान समय की कतिपाय समस्याओं-विसंगतियों और विडंबनाओं को अपने उपन्यास का विषय बनाया है। वह 'कला कला के लिए' जेसै सिद्धांत की है। वह 'कला को जीवन के लिए' उपयोगी मानती है। यही कारण है कि उनके उपन्यासों में अद्भुत परिवर्तन कमी चेतना है। उनके कुछ छह उपन्यास प्रकाशित हैं, जो निम्नवत् हैं-

1) खुले गगन के लाल सितारे
2) सलाम आखिरी
3) पत्ताखोर
4) सेज पर संस्कृत
5) सूखते चिनार

6) हम यहाँ थे।

लेखिका के सभी उपन्यासों को परिचय यहाँ अपेक्षित है। अतएव उपरोक्त उपन्यासों के पचिय क्रमिक रूप से दिया जा रहा है-

खुले गगन के लाल सितारे :–

यह उपन्यास सन् 2000 ई. में राजकमल प्रकाश दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में खासतौर ने नक्सलवादी आंदोलन में शरीक तमाम क्रांतिकारियों के दर्दनांक अंत पर प्रकाश डाला गया है। उपन्यास की सारी घटनाएँ इसलिए विशस्त प्रतीत होती हैं चूँकि लेखिका का बड़ा भाई भी इसमें सक्रिय रूप से सम्मिलित था। इस उपन्यास की विश्वसनीयता का एक और ठोस कारण है कि इसमें मध्य कलकत्ता मे सिथति हाथी बगान नामक जगह के 'लाल' गली नामक इलाके को रखा गया है, जो वास्तव में 1970 के दशक में सत्ता और व्यवस्था के विरूद्ध आंदोलित था।

लगातार तीस वर्षों तक इंतजार करती रही गई मणि कि आखिरकार 'इन्द्र' का क्या हुआ? इस बात की जानकारी लेने वह इस उपन्यास के कए महत्त्वपूर्ण पात्र गोपाल दा से संपर्क साधती है। इन्द्र जो कि नक्सली आंदोलन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा था वह उसी आंदोलन का हिस्सा था जिसमें न जाने हजारों युवाओं ने अपने को होम कर दिया। आजादी की बाद जब मोहयंग की स्थिति उत्पन्न हुई। सत्ता में बैठे लोग जब देश की दशा सुधारने मे अक्षम सिद्ध हुए, तब जाकर जलपाईगुरी जिले में सन् 1967 ई. में यह आंदोलन अग्ररूप से आरंभ हुआ। उपन्यास में लेखिका लिखती हैं। "भूमि उसकी, हल उसका, जोते जो उसे' की तर्ज पर हुए भूमि दखल के प्रथम सशस्त्र आंदोलन में जिसमें भूमि-विहीन किसानों ने जमींदारों की भूमि कब्जे में, कर ली थी। इसके कारण एक भयानक सशक्त आंदोलन छिड़ गया था। यह आंदोलन शोषक-शोषितों के बीच।"[1]

अच्छी बात यह थी कि इस सशक्त आंदोलन में गोपाल दा भी शामिल थे। पहली बार समाज की अंतिम पंकित के जन: समुदायों में शोषणकारी नीतियों के खिलाफ विद्रोह फूटा था। इस आंदोलन से जुड़े कॉमरेड दिलीप विश्वास की जघन्य हत्या कर दी गई। पलिस ने इसे आंदोलन के दमन की पुरजोर कोशिश की, लेकिन उग्र युवाओं को रोक नहीं पाए। कथा लेखिका यहाँ नेपाली दा नामक व्यक्ति से भी इन्द्र, की जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करती है। वह इस उग्र आंदोलन में शामिल ग्रामीणों की स्थिति को भी जानने की चेष्टा करती है।

सलाम आखिरी : एक परिचय–

'आखिरी सलाम' नामक उपन्यास मधु काँकरिया का दूसरा चर्चित उपन्यास है, जिसका प्रकाशन राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से 2000ई. में हुआ। यह उपन्यास मुख्यतः वेश्याओं के जीवन तथा वेश्यावृति की समस्या पर आधारित है। उपन्यास में लेखिका ने वेश्याओं की एक रहस्यमय संसार का सृजन किया है।

लेखिका स्वयं कहती है- "शताब्दियों को बोझ ढोती देह की मंदिरों और पुजारियों की यह वह दुनिया है, जो हर कमरे की पृथक-पृथक इतिहास, जहाँ हर रात देह ही नहीं उघड़ती है, बल्कि आत्माओं की भी चीर-फाड़ होता रहता है।"[2] बैरकपुर तथा खिदिरपुर की गलियों में अभिशपत जीवन को जीने बाले लोगों की पीड़ादायक वृतांत ही इस उपन्यास की कथा का आधार है।

कलकत्ता के इस लालबत्ती क्षेत्र में 18 से लेकर 40-42 वर्ष उम्र वाली अनेक वश्याएँ रहती हैं। जो देश के अनेक क्षेत्रों यथा-बंगाल, नेपाल, आगरा आदि की रहने वाली है। अतिआधुनिक मेकअप से सुसज्ति ये वेश्याएँ सड़क के किनारे खड़ी होकर अपी खड़ीदार का वेशब्री से इंतजार करती है। सस्ते एवं मंहगे दामों पर बिकने वाली ये स्त्रियाँ ऐसी लगती हैं मानो वह हाड़-मांस का देह लिए पुश बजार का गोश्त हो। उपन्यास का एक मार्मिक कथन उक्त संदर्भ को प्राकशित करने में सक्षम है, जिसमें लेखिका कहती है- "ईश्वर की मानव को अमूल्य भेंट प्रेम और नारी की सबसे मूल्यवान संपत्ति शील के खरीद फरोख्त के ये रास्ते।"[3] इन्हीं खुली सड़क प ग्राहकों के इंतजार में आँखे बिछाए ये स्त्रियाँ खरीद फरोख्त का सामाना है, जिसका मोलभाव होता है, अपना रेट होता है। डिसकांउट होता है, ऑफर होता है आदि-आदि। परिवार और समाज से पूण्रत: कटी हुई ये। लाइनवालियाँ अशिक्षित, अविकसित तथा आत्मा को भी बेचती हैं रोज-रोजा ग्राहक उसके देह ही नहीं आत्मा को भी पीसते हैं। लेखिका ने वेश्या जीवन के इस घोर सत्य को इस उपन्यास में उद्घाटित किया है। वह एक स्त्री होने के नाते भी स्त्री के इस दर्द को अनुभूत करती है। शायद उपन्यास में प्रयुक्त पत्रकार सुकीर्ति लेखिका का ही प्रतिरूप हो। जो कलकत्ता इन वेश्याओं के जीवन पर गहन अध्ययन कर रही हो वेश्याओं के जीवन की शारीरिक तथा मानसिक यातनाएँ यथार्थ रूप में उद्घाटित करना है लेखिका का रचनात्मक उद्देश्य है।

पत्ताखोर : एक परिचय :–

यह 2005 ई. में राजकमल प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित मधु काँकरिया का तीसरा महत्त्वपूर्ण उपन्यास है पत्ताखोर। इस उपन्यास में एक युवक के जीवन-संघर्ष की कथा है। उपन्यास का कथानक इसके मुख्य पात्र आदित्य के इर्द-गिर्द घूमता रहता है। आदित्य, हेमंतबाबू और बनश्री का बेटा है। माता-पिता दोनों नौकरी पेशा होने की वजह से 12-13 वर्ष से ही अकेला पड़ा पुत्र आदित्य है। इनके पिता जितने शांत, संत स्वभाव के, माँ उतनी ही बदमिजाज और प्रचंड गुस्सेवाली। लेखिका ने लिखा है कि- "एक ही घर में रहते हुए भी तीन जिन्दगियाँ अपने-अपने द्वीप में बहती-बिचरती रही, बिना किसी हो छूते हुए।"[4]

आदित्य अपने ही परिवार में अजनबीपन का शिकार है। इस अजनबीयत को भरने के लिए वह संगीत में रमना चाहता है। पूरे संसार के लिए सरस तथा आनंदमय गीतों का निर्माण करना चाहता है। अपने तनावों से मुक्ति हेतु आदित्य ऐसी जगह को खोजता है, जहाँ ताड़ी तथा गांजे आदि के सेवन किया जा सकता है। यहाँ उसके मित्र का बड़ा भाई अभिज्ञा सुट्टा मारने के लिए उत्सांहित करता है। इस तरह धीरे-धीरे आदित्य

नशे की दुनिया में उतरता चला जाता है। आदित्य मात्र सोलह साल की अवस्था में ख्यात नशेड़ी हो जाता है। पिता उसे उपदेश देकर समझाने की चेष्टा करते हैं पर संभल नहीं पाता।

सेज पर संस्कृत: धर्म की आड़ में स्त्री-शोषण–

'सेज पर संस्कृत' राजकमल' प्रकाशन, नई दिल्ली, से 2008 में प्रकाशित मधु काँकरिया का चैथा उपन्यास है। इस उपन्यास में लेखिका ने एक ऐसे परिवार का चित्रण किया है, जिसका मुखिया और पुत्र ऋषि की मृत्यु हो जोने के कारण माँ पर सारी जिम्मेदारियाँ आ पड़ी हैं। दो-दो पुत्रियाँ और घर में कोई भी पुरुष नहीं जो परिवार को सहयोग और सहारे दे सके। हमारे समाज में बिना पुरुष वाले घर की स्थिति कुछ खास बेहतर नहीं होती। शिकारी कुत्तों की भाँति लोगों की कुदृष्टि उस घर पर रहती है। इसी बेचैनी के कारण माँ साध्वी बन जाने हेतु तत्पर दिखाई पड़ती है। साथ ही अपनी दोनों बेटियाँ संघमित्रा और छुटकी को भी दीक्षा दिलवाना चाहती है। इसलिए वह दोनों को शिखर जी के पास ले जाती है, ताकि वहाँ के दुख, दैन्य, दारिद्रय और जीवन की भयावहता को वे अपनी आँखों से देखे और शांत प्रसन्न और सौम्य रहने वाले साधुओं-साध्वियों को देख उनसे प्रेरित हो जीवन के मोह और भोग से ऊपर उठकर; मनसा, वाचा, कर्मणा दीक्षा का वरण करें। जिससे जीवन से थकी, हारी इस माँ को उसकी जिम्मेदारी से सम्मानपूर्वक मुक्ति मिल जाय।' वास्तव में वह अब सांसारिक बंधनों से मुक्ति चाहती है। वह कहती है- "कितनी वाहियात चीज है यह शादी। मैं नहीं चाहती कि इसमें फँसों, मेरी ही तरह विधवा हो और तिल-तिलकर अपने बच्चे को मरते हुए देखो। संसार में रहने का मतलब ही है दुःखों के दलदल में फँसना।"[5]

सच में माँ का डर और असुरक्षाबोध इस कारण है कि घर में कोई पुरुष नहीं है। यह आदमियों की दुनिया है जो रोटी तो देगी पर बोटी नोंच लेगी। आर्थिक विषमता के चलते अब घर न उससे संभलेगा और न ही संघमित्रा की साबुन के धंधे से। इस कारण सबसे अच्छा और सीधा मार्ग दीक्षा का ही उसे नजर आता है। इस पर कहती है संघमित्रा- "तुम्हें लगता है कि तुम अपने बूते हमारे लिए प्रति का जुगाड़ नही' कर पाओगी तो इन्हें धर्मरूपी प्रति के हवाले कर दो पर हमें न पति चाहिए न घर। हमें बस थोड़ा-सा भरोसा दो, जिनसे हमारे पंखों को मजबूती मिल जाय, फिर हम अपना आसमान खुद ढूँढ़ लेंगे। औरत हाने के डर से तुम खुद भी मुक्त हो जाओ और हमें भी मुक्त कर दो।"[6]

उपन्यास में माँ ने साध्वी जीवन का आरंभ घर से कर दिया। दही, चना, हरी, पत्तेदार सब्जियाँ आदि के साथ-साथ सूर्यास्त के बाद आहार का त्याग यह नियम भी लागू हो चुके थे। बाल सुलभ छुटकी पर माँ का गहरा प्रभाव बढ़ता जा रहा था। पाँच साढ़े पाँच वर्ष की छुटकी खेलने-कूदने की उम्र में धर्म की दलदल में फँसती चली जा रही थी। ऋषि के जाने के बाद उसे अकेले स्कूल जाना भी अच्छा नहीं लगता था। टीचर की डाँट और महाराज की प्रशंसा इस कारण भी वह साध्वी जीवन की तरह आकर्षित होती है। बालमन सही-गलत समझ नहीं पाता। संघमित्रा की अनेक कोशिशों के बावजूद माँ का पलड़ा भारी हो जाता है। चाहकर भी असफल संघमित्रा छुटकी को वापस जीवन में नहीं लौटा पातीं।

सूखते चिनार: एक परिचय–

मधु काँकरिया का प्रकाशन क्रम के अनुसार पाँचवा उपन्यास है- 'सूखते चिनार'। इस उपन्यास का प्रकाशन सन् 2012 ई. में भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली से हुआ। 'सूखते चिनार' नामक उपन्यास में उपन्यास लेखिका ने स्वप्न और उड़ान को भरते हुए उपन्यास के आरंभ में ही लिखा है- "मेरी जिंदगी भारत के राष्ट्रपति के नाम समर्पित रहेगी। मैं भारत और भारत के संविधान के प्रति समर्पित रहूँगा। उसकी के लिए जीऊंगा.....उसी के लिए मरूँगा .....कि मैं अपना हित .....सबसे अंत में सोचूँगा। मिलिट्री में भर्ती हुए संदीप ने यही शपथ देहरादून में इंडियन मिलिट्री एकेडमी के पासिंग-आउट परेड के अंत में दोस्तों के बीच टोपियाँ उछालने के बाद ली थी। लड़का जो पारंपरिकता को छोड़कर कुछ अलग करने की सोच रहा है। मैंने तय कर लिया है कि मुझे फौज में दाखिला लेना है।

संदीप पापा को समझाता है-"पापा। मैं क्या करूँ, मुझे बिजनेस से विरक्ति है। मैं अच्छा बिजनेसमैन बन ही नहीं सकता। मेरी मानसिक बनावट वैसी है ही नहीं। हो भी नहीं सकती, मैं यह जानता हूँ। मैंने खूब सोचा है इस पर।"[7] संदीप को बिजनेस के बारे में नफरत इसलिए है कि उन्होंने अपने पापा और उनके साथियों को अपने जीवन में हजार से लाख और लाख से करोड़ तक पहुँचाने की व्यर्थ दौड़ में भागते हुए देखा है। इसमें केवल दौड़ ही दौड़ है। मानसिक और बौद्धिक संतोष कहीं नजर नहीं आता। यह मैं सह नहीं सकता।

'हम यहाँ थे: एक परिचय–

'हम यहाँ थे' मधु काँकरिया का छठा तथा अंतिम उपन्यास है। इस उपन्यास को लेखिका ने पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध में विभाजित किया है, जिसमें 'क्योंकि तुम कर्म नहीं हो।' "दीपशिखा की डायरी', 'अपने-अपने जंग', 'धर्म और शर्मा', 'मेरे घर आई जिंदगी।' 'न जाने नक्षत्रों से कौन, निमंत्रण देता मुझको मौन', 'ओ जिंदगी। 'ओ प्राण। और उत्तरार्द्ध में 'प्रेम और पहाड़', -इस गाँव में अभी एक औरत बची हुई है' और आखरी में' सुनी-सुनाई आदि को लेकर उपन्यास को मधु कांकरिया ने चित्रित किया है। उपन्यास की शुरूआंत ही जंगल कुमार द्वारा दीपशिखा को लिखी हुई चिटठी से होती है। दीपशिखा को लगता है कि उसकी जिंदगी में कुछ भी सत्य नहीं है, सब हबा हवाई किस्सा है या स्वप्न है। दीपशिखा दिनभर धुमक्कड़ी करती रहती है और 'निरुद्वेश्य निर्देश देती हुई वह भटकती रहती है, पर बस एक ही पागलपन सवार रहता है कि वह लोगों की घरों में झाँकने का प्रयास करती रहती है। घर चाहे सड़क पर हो या बदनुमा, मैली धुँधली बस्तियाँ हो, या फिर कोलकात्ता के अलीपुर, कैमक स्ट्रीट जैसे रईस इलाके की गगन चुंबी इमारतें क्यों न हो। इंसानी दुख-दर्द, सुख-स्वप्न, उम्मीद-नाउम्मीद की जिंदा फड़फड़ाती कहानियाँ हर जगह बिक्री हुई मिलती ही हैं।

निष्कर्ष–

उपन्यास के बहाने लेखिका ने पाठकों को सोचने पर मजबूर कर दिया है कि अपनी अभिरुचि के अनुसार हर व्यक्ति को आगे बढ़ने का मौका मिलना चाहिए। हिन्दी साहित्य में महिला लेखिकाओं का योगदान

महत्त्वपूर्ण रहा है। हिन्दी साहित्य अपने उद्भवकाल से ही समाजोन्मुख था। मानवतावादी प्रवृत्तियों से समृद्ध रहा है। भारतीय जीवन के सभी आयामों और समस्याओं का चित्रण पूर्ण यथार्थ के साथ हिन्दी साहित्य में प्राप्त होता है। इक्कीसवीं सदी की लेखिका मधु काँकरिया ने भी अपने साहित्य के माध्यम से इसी परंपरा को आगे बढ़ाया है। लेखिका के उपन्यासों में वर्तमान समाज की चिंता मुख्य रूप में अभिव्यक्त हुआ है।

संदर्भ-सूची–

1. खुले गगन के लाल सितारे- मधु काँकरिया, पृ. 13
2. सलाम आखिरी : मधु काँकरिया, पृ. 13
3. वही, पृ. 14
4. पत्ताखोर : मधु काँकरिया, पृ. 23
5. सेज पर संस्कृत : मधु काँकरिया, पृ. 46
6. वही, पृ. 100
7. हम यहाँ थे : मधु काँकरिया, पृ. 24